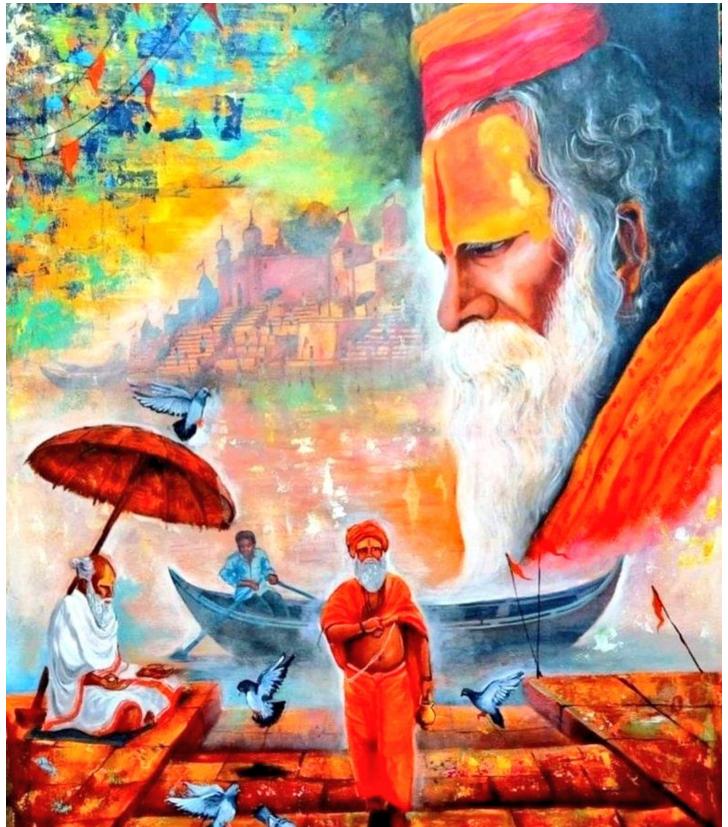
Twitter Thread by Anshul Pandey





BASIS OF VEDAS COMPILATION.

The deeds or kriyas mentioned in the Vedas is indestructible, but the tradition of Yagya's should not be discontinued. Vedas are the writings of the observations made by the ancient sages.



As this oral tradition developed things started to get disorganized. As per Brahmand Puraan,in Dwapar yug Maharishi Vyas organized them and distributed them amongst his disciples for further clarification. The divisions were compiled from a single Yajurved & divided into 4 parts.

The work of compilation was distributed amongst Jaimini, Sumantu Vaishampayan and Paeel rishis. They came to be known as Rigved, Yajurved, Samved and Atharvaved. The fifth disciple was given the task of of explaining and interpreting the Puraan and their history.

His name was Lomharshan, Whom we commonly know as Sutji.

1. In Rig Ved we mostly find the mantras pertaining to Yagya which can be sung for the worldly good and benefit. Also the importance of Priest emerged from here.



2. In Atharvaved, we find mantras pertaining to Brahmatatva or the spiritual and essential Truth. Here the karmakaand for the Kings was described in detail.

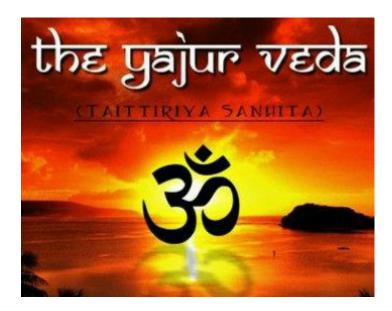


3.Samved:- Whatever part of the above mentioned Vedas was left out,it was compiled as Samved.



4. Yajurved:- Whatever was left from the compilation of Samved, was then compiled in Yajurved. It defines the ways and means of how a Yagya should be conducted.

Thereafter a long tradition of sages followed. In this tradition we find Rishi Yagyavalka who was one of the



most learned Rishi of his time. It is said that he was so sharp that none of the other rishis could answer his questions in King Janaks court. He was declared as the most learned one. Rishi Shakalya challenged him, On loosing had to face death penalty.

https://t.co/m5Q9j9J8yt

Reason behind division of Vedas in 4 parts as per Bhagwat puran\U0001f447

\u091c\u092c\u092c\u092c\u0930\u0939\u0939\u094d\u0935\u0947\u0924\u094d\u0924\u094d\u0924\u0936 \u090b\u0937\u093f\u093f\u092f\u094b\u0902\u0928\u0947\u0926\u0947\u0916\u093e \u0915\u0940 \u0938\u092e\u094f\u0931\u0936\u094f\u0936\u094f\u0938\u0947\u0932\u094b\u0917\u094b\u0902 \u09315\u094b\u093f\u0936\u094f\u0936\u094f\u093f\u0936\u093f\

1/3 pic.twitter.com/JQcgda1SKZ

— Anshul Pandey (@Anshulspiritual) June 29, 2020

Source- Brahmand puran

SS attached

अथ ब्रह्माण्डमहापुराणे पूर्वभागे द्वितीय अनुषंग पादे पञ्चित्रिंशत्तमोऽध्यायः

वेदव्यासाख्यान स्वायम्भुवमन्वतरवर्णनं नाम

सूत उवाच

देविमत्रश्च शाकल्यो महात्मा द्विजपुंगवः। चकार संहिताः पञ्च बुद्धिमान्वेदिवत्तमः॥१॥ पञ्च तस्याभविञ्छिष्या मुद्गलो गोखलस्तथा। खलीयान्सुतपा वत्सः शैशिरेयश्च पञ्चमः॥२॥ प्रोवाच संहितास्तिस्तः शाको वैणो रथीतरः। निरुक्तं च पुनश्चक्रे चतुर्थं द्विजसत्तमः॥३॥ तस्य शिष्यास्तु चत्वारः पैलश्चेक्षलकस्तथा। धीमाञ्छ तबलाकश्च गजश्चैव द्विजोत्तमाः॥४॥

बाष्कलिस्तु भरद्वाजस्तिस्रः प्रोवाच संहिताः। त्रयस्तस्याभवञ्चिष्ठाच्या महात्मानो गुणान्विताः॥५॥

धीमांश्च त्वापनापश्च पान्नगारिश्च बुद्धिमान्। तृतीयश्चार्जवस्ते च तपसा शंसितव्रताः॥६॥ वीतरागा महातेजाः संहिताज्ञानपारगाः। इत्येते बहूवृचाः प्रोक्ताः संहिता यैः प्रवर्तिताः॥७॥ वैशंपायनशिष्योऽसौ यजुर्वेदमकल्पयत्। षडशीतिस्तु तेनोक्ताः संहिता यजुषां शुभाः॥८॥ शिष्येभ्यः प्रददौ ताश्च जगूहुस्ते विधानतः। एकस्तत्र परित्यक्तो याज्ञवल्क्यो महातपाः॥९॥

षडशीतिस्तथा शिष्याः संहितानां विकल्पकाः। सर्वेषामेव तेषां वै त्रिधा भेदाः प्रकीर्त्तिताः॥१०॥

श्री ब्रह्माण्डमहापुराण पूर्वभाग द्वितीय अनुषंग पाद अध्याय-३५

वेदव्यासाख्यान स्वायंभुवमन्वतर वर्णन

सूत जी बोले कि वेदज्ञों में सर्वश्रेष्ठ, द्विजपुङ्गव देवों के मित्र परम बुद्धिमान् महात्मा शाकल्य ने वेद की पाँच संहिताओं की रचना की।।१।। उनके पाँच शिष्य हुये वे हैं—मुद्गल, गोखल, खलीय, मत्स्य और पाँचवे शौशिरेय।।२।। द्विजश्रेष्ठ शाकल्य ने शाक, वैणी और रथीतर तीन संहिताओं का प्रणयन किया। द्विजश्रेष्ठ शाकवैणी स्थीतर ने तीन संहिताओं का प्रणयन किया, फिर चौथे निरुक्त का प्रणयन किया।।३।। उनके पैल, चेक्षलक, बुद्धिमान्, तवलाक और गज ये चार द्विजश्रेष्ठ शिष्य थे। बाष्किल पुत्र भरद्वाज ने तीन संहिताओं का प्रवचन किया, उन महात्मा के गुणान्वित तीन शिष्य हुए।।५।। पहला बुद्धिमान् आपनाम था, दूसरा बुद्धिमान् पात्रगारि था और तीसरा तप से प्रशंसित व्रत वाला आर्जव था।।६।। ये तीनों शिष्यगण, वीतराग, महातेजस्वी और संहिताओं के पारङ्गत स्थि थे। इन्होंने बहुत सी संहिताओं का प्रवर्तन किया। इसीलिए उन्हें बहुच कहा गया।।७।।

वैशम्पायन शिष्य ने यजुर्वेद की कल्पना की। उन्होंने यजुर्वेद की छः शुभसंहिता का प्रवचन किया और फिर उन्होंने उन संहिताओं को विधानपूर्वक अपने शिष्यों को प्रदान किया तथा शिष्यों ने विधानतः ग्रहण किया। उनमें केवल महातपस्वी याज्ञवल्क्य को छोड़ दिया।।८-९।। तथा ८६ शिष्य संहिताओं के विकल्पक हुए और उन सबके

कियों होश्रस । ए में लाक सर समें यूप में सियों और सियों में इस के के पूर्व हैं तिश्व सम्प्रतः :मूप नुम प्रकृतिक मि एक के क्रियोश किर 130911 है किक नज़म्द्र :स्पृ क मिश्राह मेरि पिछ होते मेर् फिर्फ मेर्ड पाणितिम है है भ्र निह स्प्राप्त में एक्टीके :स्पृ ।। ए० ९ ।। है किक किटीएम प्रस्कृतक महारि कृप कि प्राप्त प्राप्त प्राप्तिक के कियूप कियूप में पिए और महिन्म ।। ३०१-४०१।।ई छोड़ के मानि में नवा महि है। है वह है। व प्राप्त मानि से महिन से महिन से महिन समानवापूर्ण व्यवसार करने वाले अपने द्वारा अपने ही में आनन्त लेने वाले अवोत् आप प्राप्त मान निर्मा (यत्र कराना कराना, पक्रमा-पक्राना, यान देना होना) में हाने रहते थे, शालीन गार्थस्थाअयी थे, संज्याने के साथ जो गुण है, इस सास गुणों से शुक्त अधिगाण संस्ति कह गये हैं।।१०३-१०४।। वे अधिगण सर्वेदा छः कमों में ह जिल नाजक कि होए मेंह मजीमय , अध्येष , निया , हम्मम प्रीड्रेकडी , निजाडोक प्रे , किकडन हम्मम होयडि । है कार निम भी अर है , है । अरनी इक लगर कि किया नह निहन्ही 11505-00911 है । साम कि मीकार , है। में किस है। है। साथा जा समा की साथ है। इस मार्थ से सर्वत समार करने राजा है। हे सब देवता, ब्राह्मण अथवा राजा एको बाले, स्वयं को जानने वाले, इस संसार में तपस्या से प्रसिद्ध तथा जिल्हें गर्भ में प्रकृष्ट हम में मान हो गया बहिता भी क्षाकाल, भविष्यकाल और वर्षमानकाल का ज्ञान रखने वाले तथा सन्त पर रहने वाले, स्वयं पर सन्तुष्ट ज्याख्या जो दिल्यांपुण बाले राजीय करते हैं, ये भी ब्रह्मीय कहें गये हैं।।९९ ।। अब जो राजीये हैं, उनका में लक्षण कि हिन्म क्रियर फ्रिम्स , स्पन्त में लक् क्रियर 113,211 किया निम कि क्रियेश कर कि खिलीर में क्रियर 18 तार हेक बिड़े मृष्ट है , है तिक लगर कितिर में कलिड़े कि 110,911 है कि बैस किस लगर है , है किस लगर हिन्द्रीय में कलिएक प्राप्तीक़ कि ।। पृथु मिहार है , है निस्क लाग्नानुन्ह तक निक्र किनीनार कि विशास प्रीयाह । है हाह इंक मिहा हं , है हंस्क्रेंप का मिहाहर कि एमक के (हंछ) कि मु) को कि हिहाहर—है थेरह कि अप भीएए

त्रपामवान्वय वीरा उत्पद्यन्ते पुनः पुनः। जायमाने पितापुत्रे पुत्रः पिति देव हि॥१०९॥ ॥ ५० १॥ : एकेम हिंदे । मारानीयक कं क्नीयनेकप । इक्नीयवेक्स : मृष्ट किमृगफ़ार्क किप क्षेपादित तैगाव्यामी सव्यत्वतेनः तेनः। वताश्रमव्यवस्थान् क्षितम् त्रेत्रा वे व्राार् ००॥ अप्राप्तिवर्तामा स्म स्मेशव स्वयंकृतः। कृद्धिया वृद्धिमा वानानस्मिता।। १०६॥ ॥ २ ० ५॥:मीनुरीमकः श्रद्धक्ष म्य हिर्मिक्केक्वेवहरान्त म्य श्रद्धः कमिक्षप्र ॥ १ ० ५॥ ॥४०१॥र्म छ।कमेम्रायर्सार्गाणीमध भ्रष्टम् ।:म्रह्ममञ्जीगृष्ट् केन्क्रस्म विश्वीयि ॥ इ. ७ ९॥ : तमुम् : क्षेत्रम : क्षेत्रम : क्षित्रम क्षित्रम । सम्म क्षित्रम : सम्बन्धः स्वत्राः । १. ० ९॥ । । ॥१० ९॥ई सम्बन्धिकई सन्हु रिमारा के एंगे एंगे एंगे स्वाक्ष्मिनुसाक्ष के ए ।।।। ॥ १ ० १॥ मन्डीकेए द्वक्र मेंग के द्विमीए इसग्रह । मध्यम है कर्फ द्वितम् हुई छठा हाड्यून्स

मून भव्य भवज्ञान सत्याचि व्यक्ति तथा।१००॥ राजपंथस्तवा देव तेषां बह्यापि लक्षणम्।

अधिकारिय समस समस्या सम्बन्धार हे स्वायक क्ष्या है है।। ॥ ३ १॥ :। इस क्रिक्स केस हमार्था हमार्था हमार्था हमार्था समार्था समार्था । ॥७१॥:कमद्राध्यक्षक तमुम हुमासतीसकांशक । कस्त्रयस्य एक्साम्बद्धानस्य स्तीयक्ष

पूर्वमाणे पश्चित्रशत्माऽच्यावः

by 189 fir it 1838 is yet private my 189 trupicts for it industry reduced in 112, 211 for the 184 fir it 22, 160. भिष्ठ केंद्र प्रिपेट हें, 'हैं रिज्ञ क्वानिकृतिक कि कि कि क्वानिक क्वानिक जाने हैं हैं। के देवन कि कि कि कि कि 1911 is the 183, I dryly are flemed fired which I by a pryachet it is not the forter bled for भारता जात हो है हो स्तेष पुराह के पुत हैं। कुमें पुरास्त के पुत है तथा दरन को अल्युव का पुत कहा गया। 1979 XII जात और प्रति के के पुत हैं। कुमें पुरास्त के पुत हैं। कुमें पुरास्त के पुत है तथा दरन को अल्युव का पुत 115 2-5 2118 torous othe see bleed up to to the being one to 518 min use both to the several Me Hirk , mper , arop , gas , teriop , bie 1199-195118 finese binn fi , 8 fert in inn meis i thus term for man 1 & fixes refer the man for all & bre no part blum 1 & fits not blum it for a term where the trible the course the property of \$2-122118 which is both the by the by हिलाह कि हिल्लीहरू आह केन्ट उन्हीं और है मिछड़ उर लाख क्षेत्र छंडीए हिलाह एक्टिन

1 g pide h dadi se habir etc 11-22-6211 g didd is der dide ज्याय यांसाय और पूरण ये चीवह विधाये हैं। आयुर्वेद, यनुचेंद, मान्यवेदोद और अर्थशास्त्र इन खाये को मितकर मीर (प्रांतिक अर प्रेर (अरेप), वस्तेष, वस्तेष्य अर्थ क्षेत्रक्ष), मीमारम (पूर्व मीमारम अर्थ प्रतास) और हन् शाखा गेरी का इस प्रकार विषया किया। श्रीतयों के छः अंग (शिक्षा, काला, व्याकरण, निरुक्त, छन मेर किया किस्ट जाब किस्ट 11 3 511 दिए निक कि एक किही के निक एवं उक्की के विवाह कि एक है। छई बीड केरक एएटी एक फिर प्रकर छड़ 11 2 211 है हम देक और से फिरिट में एए 1912 है है ऐए देव औ कि है। है तिक्ष त्रीयरह कि किनम उपय-उपय एप्राक्त के निक्ष (लिशिश्रात) म्प्रतीय के किने 118511ई लिए ईस सि व क्ष्मकी मेरह । है फर्मने (फर्डिमिस्प्रक्) फिरिनेट किए किएन छ। या प्रक्र लिगार १ है छशीत छेएन लाग प्रनाशाप असर

॥ हु आर्त हुम्फ्रकेस्टा महित्त वामानानकाछ्युं छ है। वामू है छ एकार्ज़ एंड है छहे हेनाव ॥ १९॥: मिस्र : प्रकेष्टिमाम् । नियम । निर्मात विकास । क्षित्र । क १४ शामि : १७३ स्प्रेस्प : प्रमानीय छडिउछक् । ह छात्राभू : महेल : ११ : हिन्स : १४ छो। 115 911 fegunstries & feut ibes ikusaklaskut ivensy judes 119 911:16pt : SPUSE 166 TURSE 6-legimes 1: FSUSES PRINCE PRESENT 119 911:16pt : SPUSES 166 PRINCES PR 1351: प्रद्र र्त त्रीक्षिक्षेत्रनाम किवेन्य किवेन्य । एक्ष्रेव्यमिश्वाको क णिम् स्मार्थम्य त्य : एक्ष्रेवर्त क्रिक्ट किवे : फ्ष्रेव्यक्ष प्रवर्त । श्री क्ष्येव्यव्य प्रवर्त ।

॥ थ आ : मार्गियायः । मार्गियोः गिष्माक्षात्रकं मीङ्गार ह क्रिक्स है क्रिक्स है। क्रिक्स हु क्रिक्स है। अस्ति । अस्ति । अस्ति है। अस्ति है। अस्ति । अस्ति है। अस्ति । अस्ति है। अस्ति । अस्ति ।: गिन्कु मक्नमीहमाछाए कुम्बादीएवाडी ए_ह

менленийди

500

निष्ठ पृष्ट फेकी तीपुनुस्र कि माणिय के जिल्ह कि कि छह अस है है कि इक उन्नी है है है कि का डेन्ड है 11009-27911ई किक क्रिक क्रिक क्रिक कि कि कि कि कि कि कि कि क्रिक क्रिक्तिक क्रिक्तिक क्रिक्तिक क्रिक्तिक क्रिक् उपेष्ठ कि लिक्स्तिक सर कि कि वह । है किए कि लिक्सि लिक्सि क्यांक्रिक महार कि में प्राप्त कि के किए के प्रत्य क हैंकि क्या कि नेस्ट बर 1ई तिक के तारीक्षेत्र में अन्यून साम्प के दिलावई क्षेत्र में स्वतित्त कर निक्ष तिक के दिलावई केयू वित्त बार और मार । ई तंत्र हुन्छ-कृष्टि म , ई त्रिक नाकम प्रम म प्रम नाछ कंद्री प्रक धुम खडूकम एउ तीहरू में रिकालिस इन्हें-इक कंसर 1139 है। है ईस्टई स्तेम्टीए कि मुस्स्य प्रकार प्रकार सम्प्रीमध्य क्रिकेम्प्राप्तम् प्रकार सङ्गातिन प्रकार महिल्ला क्रिकेट स्वापन स् या स्वापन स् अह के मिलीक के समित के बाद समुद्रम का उब प्रारम्भ होता है, उस समय के निमान के प्रमुक्त के प्रार र रुख कि द्वारी सिम्प्य । कि के स्थामन प्रकाशीय केम्बी । 1079-32911 है तीय निम्न कि क्रिक्स ममान्य करत के किए उक्केशित कि साम्पर स्टाट क्यान करत है उप स्टि कि स्थापन के उत्तरकाय । किए कि ताम्पी कि मेथ क्रार्त 11029-2511 किस लग कि किर विकास किमान में के प्राप्त आहे हो। से में के अपने कार वह कि से के साम के के लिए हो। एक शिक्ष के सामाज के 11 27 १ - ६ 7 १ ।। एमान्व सम् एक निक्त किया एक सताय एक संप्रमाशास्त्र एक तिमीएम कि निर्माणक मीस निव गर्नतिक विश्तव से सब कुछ तो समाज कर दिवा था। अतः बचे हुए लोग गृहविवहीन हो। बीरे बीर बीर वे अपना कही-क्रीम्ब ,के नहिवीतुए एकि से इंकि छक् , ए क्षेत्र में छक् वह वह वा वा ए क्रि कर प्राप्त ने तीक्ष से जागाना ाम के किने गाउँ हम मेर में एक के किनी केल किनोतान में एक के किनोस एवं तहर्मण हा एए एक्टि इतिमार र मा । है किस मान कि किस मान के किसमर्थ ने स्थापन कुम निम्म सारी सिमान आहे सि । 1999 । है भीर केन कुर अक्का के अपार प्राधान में अपार माना अपाय माना में अक्का अपाय में अक्का कि की अपार विकासी प्रकारतों कि किस क्षेत्रिय शीव्युस प्राप्ती हुई पृत्तु हुम्छ कर प्रत्यी में शीवि के प्रत्मकन्म शीवि हुम -प्रींच मिल्रामास क्रिस क्षेत्र क् वह सुष्टे एर दुर्व की मीते वर्ष के उत्तीत हो जाने पर, यब पृथ्वी एर औपवियों उत्तय हो बाती है, तब जो मुहहोत मिल्स हं , क्रम क्रड अही केही , हे मार्क जुरू हंड एड्ड से मोडर के म्हिनीक झार केसर 11999-09911 है सिंह कर किस हं कर , केवन , काइने , कर , करका , ब्रह्म , ब्रह्म , करने , गुरुस्त , कर्ड में गुरु सामित कि निर्ध कर्र समुद्र हमान के उत्पर, सनान की उत्पाद के मिल के उपन के मानि सम्बन्ध के अब के मान है भाग प्र रोग के लित में ताककू भी अर 18 ताल म्हीक शुक्र का , है ताले प्रमुख है। तहक मत समय रीवा रोगक मन्तर को प्रतिक्षा करने वाल वे श्रीयमाण तपियाणा मन्तरस के उत्मव के लिए अर्थात् मन्वर्त्तर को मुखी क्रमक मंत्री के मान्स 119 55-55511 है के क्रमीकार ग्राती के मानस हम और शिक्षप के 1 है तिक कि क्रमीय 1182911ई किए तथ्नी गृह किक रक्त होते हैं किए कि किम्पूर कर निवानी तह। वहनू वातक के किस है सकता कर विकास के विकृष कर गाउक पर तब जो भी कतियुग में समाप्त हो गये थे, उनमें से जो बचे हुये थे, वे सप्तिविंगण और मनु, समय की अपेक्षा के जनमंत्र हैं हैं हैं हैं हैं जनमें नामान अभाग अभाग अभाग समाने हैं हैं र्मात्र स्वाप्तार के एक्तम ।। ६ ८ ९ - ९ ८ ९ ।। ई कित्र मिक्र मिक्र कि उत्तन्त के पूर्व मिलावर कि उत्तन्त कि है अव महाहर । है तिहं सीकृप कि रिगिल के अरूकम केषु में अरूकम लाव गिए उम निव्य है एवड़ि के अरूकम केष्र रहत कि ततस्ते तपसा चुन्काः स्थानान्यापुरधन्ति च॥२००॥ र्तिक के ब्रीएट के प्रत्मकन्म प्रप्र निंड क्निट के प्रत्मकन्म निक्रप प्रकार मिर । है व्रिक मारूम कि एर्युतम कि एर्युनिक एमक र्रुट प्रकाम विक्रमिक में सिडिकी की सिर्फ ई साम एक्स में स्थित है कि में एक्सिक में फिल्म्स उपस्थिता दृहान्द्रे हे हे स्वगंबासिनः। ॥११९॥ स्टेस कुर्न स्कानह कुर्ने हिन्द्र । इस है कुर्ने मुन्तिक कुर्ने मन्त्र किस 11939-130911ई निक्र कत तनह क्रिट में एक्टिनिक एपूपम हं प्रती और है तिंह हरूर एएकीम् और सम्पूर्ण स्थितिकाल तक एक सनवृग में उहरते हुये, इसी प्रकार मिल के अन्य मन्तनारों में ईसर देवता, जितर, खांच अवेक्ष्माणावशिनस्तिष्ठत्वा भूतमंप्लवात्॥११८॥ ।: किमीयद्भामि मिमाम स्मामकथी। मृहिन्छी ॥३३१॥रिह्मीववीमक्ष गणव वर्ष गम्माएक ।महूक्ष्माव्य क्र किलि गीए इनाइनी ॥७१९॥मुष्टमानम्बर्गेन्द्रम न्नीख्या देशहम : हैन्य। :एडम व्यक्तुन्यानाख्य मेड्राम्यू रिक्टम ॥७३१॥मध्योमप्रविद्य मध्य ग्रामकृस्पम ग्रिमाह ॥३१९॥:रम्भक् प्रयंश तथ्यी है स्वत्वावत्वेष्ठ है पुरुक्षि विषय क्राय प्रजासु सामिकतासु सामिकतासु क्वायत्ववित्। ॥ १९९॥: मम रिरोई छोगछा छक्षिमक्षाक्राक्रीमाध्य । एक्सोमक्षीणक्रांमध्यितीनिवयड मित्र हिरू ॥३८१॥ छ विकालिमासम्बर कृत्रिक्ष माहरमा कृत्रिक्ष । स्टिमश्रोक्ष महर स्निकरम्म्हिक्ष ॥४१९॥ : तिक्रमी कंक्तीयक में ये गणावड्म वेष मात्र ।। एत ।। मन्यनग्रमीक्षास्ते क्षीयमाणास्त्रपास्त्रमः।मन्यनग्रेभवस्याथे संतत्यथं च मवद्या।१८५॥ ॥४८९॥:तिष्रमी हं मुनास्प्रीमालक छहिम विषयमा ।।इन हं मुनाशरी विन हाप्रनाम्हतक् छम् ॥६१%॥इन है ह छन्।कन मध्याद्वह ग्रिक्ष १३म : १८५ किन मध्याप हो। १४ है।॥ ॥६८९॥: मृ रंगाड मेड्र केए रेम्ब्रम विद्धि। इ स्प्रामक मेडीए वृक्तामक म । । ॥१९१॥ही क्रम्स्क्य किछि वहस्य विषयाम।सिक्ष्यस्याखादाः। खादी व ह । विस्पत्त त्रामुगः मिक्रमक्ष्यं मानुवास्यया। सर्वा मुलिपायाञ्च नामाय व्ह्रमाञ्चमाः ॥ १ ९ १॥ अस्त के में के किया है। विश्व के सद्या यथा कुतस्य सन्तानः किलिएवः स्पृतो बुधे:॥१८ २॥ ॥०१ शाहककेषु क्रमियमी विषेषु ही माछका ।मारहकूमाम : मा विन विमान विवाह 103911:TB\$ कि में हैं कि क्षित्रीय कि एक क्रिक्षी है जिक्तिक्षी र्रिप्पम ॥१८९॥:।मध्योद्यक वामात्मम विद्वम्य विवास ।:।क्यापि होत्तिक्य व छाष्ट्री रात्त्वमेवत् Intribight Snits

Facebook link■ https://t.co/ARWJ4FQXVs

Instagram link■ https://t.co/S08F7WqMIR